साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001

प्रेस विज्ञप्ति
साहित्योत्सव का चौथा दिन
पूर्वोत्तरी में उत्तर–पूर्व और उत्तरी लेखकों ने प्रस्तुत की अपनी रचनाएँ
मैं पूरी दुनिया के लिए लिखती हूँ आधी दुनिया के लिए नहीं – नासिरा शर्मा
लोक साहित्य : कथन एवं पुनर्कथन विषयक संगोष्ठी का पहला दिन

नई दिल्ली, 24 फ़रवरी 2017 । 24 फ़रवरी 2017 को साहित्योत्सव के चौथे दिन की शुरुआत **'आमने–सामने'** कार्यक्रम से हुई, जिसमें साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 से पुरस्कृत लेखकों की प्रतिष्ठित साहित्यकारों/विद्वानों से बातचीत करवाई जाती है। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कार्यक्रम आरंभ करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य लेखकों को सीधे पाठकों से रू–ब–रू कराना है।

सर्वप्रथम हिंदी लेखिका नासिरा शर्मा से अशोक तिवारी ने बातचीत की। विभाजन को लेकर पूछे गए एक सवाल के बारे में जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि इसमें एक हिंसा लोगों ने प्रत्यक्ष झेली तो दूसरे लोगों ने मानसिक हिंसा झेली है। उन्होंने लेखन को किसी खाने विशेष में बाँटने पर नाराजगी जताते हुए कि मैं पूरी दुनिया के लिए लिखती हूँ आधी दुनिया के लिए नहीं।

मराठी भाषा के पुरस्कृत लेखक श्री आशाराम लोमटे से डॉ. रणधीर शिंदे ने साक्षात्कार किया। अपनी कहानियों को लेकर किए गए सवालों के जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि ग्रामीण जीवन पर आधारित पहले की कहानियाँ शायद ही मनोरंजक होती थीं। उन्होंने गाँवों की बदलती राजनीति और जीवन–मूल्यों के विघटन पर चिंता जाहिर की।

गुजराती के पुरस्कृत लेखक श्री कमल वोरा से डॉ. दिलीप झवेरी ने बातचीत की। उन्होंने कहा कि कविता उनके लिए स्वयं के आविष्कार का ही माध्यम नहीं है, बल्कि यह भाषा को उसकी संपूर्ण प्रभावान्वितियों के साथ खोजने का प्रयत्न है। उनका मानना है कि संपूर्ण कविता कभी भी संभव नहीं, यदि कभी ऐसा हुआ तो कविता लिखने की कोई ज़रूरत ही नहीं रह जाएगी।

तेलुगु के पुरस्कृत लेखक डॉ. पापिनेनी शिवशंकर से श्री अमरेंद्र दासारी ने साक्षात्कार लिया। डॉ. शिवशंकर ने अपनी रचना–प्रक्रिया के बारे में बताया और कहा कि गहन भावनात्मक अनुभूतियों के लिए वे कविताएँ लिखते हैं, जबकि विवरणात्मक अभिव्यक्तियों के लिए कहानी अथवा निबंध का सहारा लेते हैं।

ओड़िया की पुरस्कृत लेखिका श्रीमती पारमिता सतपथी से डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने बातचीत की। श्रीमती सतपथी ने कहा कि महिलाओं की विनम्रता को उनकी कमजोरी नहीं मानना चाहिए। वास्तव में प्रत्येक स्त्री किसी भी प्रकार की कठिनाइयों का सामना करने में सक्षम है। मेरा लेखन स्त्रीत्व की खोज और स्त्री की पहचान से जुड़ा हुआ है।

कश्मीरी के पुरस्कृत लेखक श्री अज़ीज़ हाजिनी से श्री फ़ारूक़ फ़ैयाज़ ने साक्षात्कार लिया। सवालों के जवाब देते हुए उन्होंने अपनी रचनात्मक यात्रा और अपने ऊपर पड़े प्रभावों का ज़िक्र किया। भूमंडलीकरण के दुष्प्रभावों के प्रति उन्होंने चिंता जताई और कहा कि मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। साक्षात्कार के दौरान श्रोताओं ने भी निस्संकोच अपने प्रिय लेखकों से सवाल पूछे, जिनके उन्होंने संतोषजनक जवाब दिए।

पूर्वोत्तरी कार्यक्रम के अंतर्गत आज उत्तर–पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उद्घाटन भाषण के लिए आए प्रख्यात अंग्रेज़ी कवि रॉबिन नांगोम का स्वागत करते हुए उत्तर–पूर्व की विविधता का जिक्र किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों का और विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता करने वाले लेखकों का स्वागत करते हुए कहा कि यह मंच अवश्य उत्तर–पूर्व और उत्तरी लेखकों की संवेदनाओं को एक दूसरे तक प्रेषित करेगा। अपने उद्घाटन भाषण में रॉबिन नांगोम ने कहा कि उत्तर–पूर्व का साहित्य जीवंत है और लंबे समय से पाठकों को प्रभावित करता रहा है। इसके अंदर कोई डर या आतंक नहीं है बल्कि प्रकृति एवं शांति है। विभिन्न भाषाओं संस्कृति और धर्म के होते हुए भी यहाँ का लेखन लोक की महत्ता को स्वीकार करता है और उसने हिंसा के प्रतिरोध में कई आश्चर्य जनक बिंब तैयार कर लिए हैं। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी जो आधुनिक शहरों में रह रही है कि कविताओं का स्वर विस्थापन के दर्द को प्रतिबिंबित कर रहा है। कविता में आदीवासी क्षेत्रों की लोककथाओं को भी नये स्वरूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। उन्होंने उत्तर–पूर्व की कविता को जीवंत और विविधतापूर्ण बताते हुए अपनी बात समाप्त की।

अगले सत्र में जो कहानी–पाठ पर केन्द्रित था कि अध्यक्षता प्रसिद्ध लेखक कुल सैकिया ने की और इसमें बेग अहसास (उर्दू), चमन अरोड़ा (डोगरी), अनो ब्रह्म (बोडो) और ऋषि वशिष्ठ (मैथिली) ने कहानी प्रस्तुत की।

प्रथम सत्र जो 'मेरी रचना मेरा संसार' विषय पर केन्द्रित था कि अध्यक्षता प्रख्यात लेखिका उमा वासुदेव ने की। श्रीप्रकाश मिश्र (हिंदी), महाराज कुष्ण संतोषी (कश्मीरी), क्षेत्री राजेन (मणिपुरी) और देवकांत रामचियारी (बोडो) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्रीप्रकाश मिश्र ने कहा कि लेखक अपनी स्मृति को ही लिखता है। मुझे विजातीय संस्कृति को निकट से देखने जानने का अवसर मिला जिस कारण मैं उनके जीवन संवेदना को पकड़ सका। जनजातीय समाज के संदर्भ में आधुनिकता बिलकुल भिन्न होती है। उस पर लिखने से पहले हमें उनके पीढ़ियों से चले आ रहे संस्कारों को आधुनिकता के संदर्भ में पुनः देखने जानने की जरूरत होती है। महाराज कृष्ण संतोषी ने कश्मीर के विस्थापन की संवेदना पर कुछ मार्मिक उदाहरण देते हुए कहा कि हर रचनाकार का संघर्ष इस दुःख और पीड़ा से ही जिजीविषा पाता है। देवकांत रामचियारी ने कहा कि वे स्थानीय समस्याओं को देशकाल के साथ जोड़कर अपनी रचना प्रक्रिया तैयार करते हैं। सुविधाओं का अभाव या आपकी आकांक्षाओं का अभाव ये दो ऐसे बिन्दु है जिन पर रचनाकार को बहुत संतुलित होकर लिखना पड़ता है। उमा वासुदेव ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी आलेखों पर संक्षिप्त टिप्पणी करते हुए कहा कि रचना प्रक्रिया हमारे सांसारिक अनुभवों का ही प्रतिबिंब होते हैं और उन्हें हर लेखक अपने–अपने तरीके से अपनी रचना में प्रस्तुत करता है।

द्वितीय सत्र में दर्शन दर्शी की अध्यक्षता में मधु आचार्य आशावादी (राजस्थानी), युयुत्सु शर्मा (अंग्रेज़ी), इरशाद मगामी (कश्मीरी), सुधा एम. राई (नेपाली), मदन मोहन सोरेन (संताली), ब्रजेश कुमार शुक्ल (संस्कृत), तूलिका चेतिया एन (असमिया), रमेश (मैथिली), ज्योतिष पायेङ (हिन्दी), नरेन्द्र देबबर्मन (कोकबॅराक), हिरम्य चकमा (चकमा) और घनश्याम भद्र (हो) ने अपने काव्य रचना प्रस्तुत की।

साहित्योत्सव के दौरान 24 फ़रवरी 2017 को 'लोक साहित्य : कथन एवं पुनर्कथन' विषयक त्रिदिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रतिष्ठित लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. मनोज दास ने दिया।

आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए लोकसाहित्य के महत्त्व और प्रासंगिकता पर संक्षेप में प्रकाश डाला और कहा कि इनमें समाज की सांस्कृतिक परंपराएँ ही नहीं, वरन् ऐतिहासिक साक्ष्य भी अभिलेखित हैं।

अपने उद्घाटन भाषण में प्रो. मनोज दास ने कहा कि लोकसाहित्य हमारे साहित्य का व्यापक हिस्सा है तथा प्रायः मिथक एवं किंवदंतियों से इन्हें अलग करना मुश्किल होता है। महाकाव्यों को स्थानीय परंपराओं में तो अपनाया ही गया है, महाकाव्यों ने भी अपने लोक परंपराओं को समाहित किया है। उन्होंने लेखकों से अपील की कि वे लोकशैलियों में रचनाएँ करें, ताकि इन्हें लुप्त होने से बचाया जा सके।

बीज–वक्तव्य देते हुए प्रख्यात लोक साहित्य अध्येता प्रो. जवाहरलाल हांडू ने कहा कि वाचिकता लोकसाहित्य की ताक़त है, कमज़ोरी नहीं। हमारे देश की वाचिक परंपराएँ हज़ारों वर्षों से सफलतापूर्वक संरक्षित देशज ज्ञान व्यवस्था का प्रमाण हैं। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि अंग्रेज़ी लेखक प्रो. ताबिश खेर ने कहा कि हमारे देश के महाकाव्यों की कथाएँ बार–बार कही गई हैं, कही जा रही हैं ओर आगे भी कही जाती रहेंगी।

अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में भारतीय लोकसाहित्य की देश–देशांतर तक की यात्रा को संदर्भित किया तथा कहा कि भारत के लोकसाहित्य को अभिलेखित करने का प्रारंभिक काम विदेशियों ने किया। उन्होंने यह भी कहा कि हमें यह गलतफहमी नहीं पालनी चाहिए कि लोकसाहित्य केवल वाचिक ही होता है, हमारे लिखित साहित्य का बहुत बड़ा हिस्सा भी लोकसाहित्य ही है।

सत्रांत में समाहार वक्तव्य देते हुए अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि लोकसाहित्य संकट से गुज़र रहा है, जो लगातार गहराता ही जा रहा है। उन्होंने कहा कि ख़तरा औद्योगीकरण अथवा संचार–क्रांति का नहीं है, क्योंकि लोकसाहित्य इनका सामना कर सकता है। ख़तरा आत्म–सजगता को लेकर है।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र डॉ. प्रतिभा राय की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री प्रकाश प्रेमी, प्रो. एच. एस. शिवप्रकाश और श्री हासु याज्ञिक ने क्रमशः डोगरी, कन्नड और गुजराती के आधुनिक साहित्य में लोकसाहित्य के पुनर्कथन पर केंद्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. पी. राजा ने की, जिसमें प्रो. सूर्य धनंजय, प्रो. ए. अच्युतन और डॉ. रतन हेंब्रम ने क्रमशः तेलुगु, मलयाळम् एवं संताली साहित्य में लोकसाहित्य के आधुनिक पुनर्कथन पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

शाम को हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम में अगरतला से आये राजा हसन ने बाउल गान प्रस्तुत किया।

कल 25 फ़रवरी को आदिवासी लेखक सम्मिलन और बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रम 'आओ कहानी बुने' का आयोजन किया जायेगा।